बयान

ट्रेन थी या बस मुझे कुछ याद नहीं रहा। कोई एक तेज रफ्तारवाली गाड़ी थी—उसमें तुम बैठे थे—तुम्हारा चेहरा बेहद काला और मुरझाया हुआ लग रहा था—अद्भुत रूप से काला। गाढ़े माँड़ में पिसी हुई हल्दी मिली होने जैसा लग रहा था तुम्हारी आँखों का रंग—पुतलियाँ जरा भी काली नहीं थीं। बहुत डरावने लग रहे थे तुम। अपनी सीट से उठकर तुम कुछ चले और लौटकर फिर से अपनी जगह बैठ गये। इतने में ही उचट गयी मेरी नींद। मैं थर-थर काँप रही थी—उबकाई-सी आ रही थी मुझे और सिर भी चकरा रहा था। मैंने दुबारा सोने की कोशिश नहीं की। डर लगा कि फिर तुम्हें कहीं उसी रूप में न देख लूँ। मैं दिन-भर बेचैन रही। क्यों देखा मैंने ऐसा सपना? क्या हो सकता है इस सपने का अर्थ? कहीं तुम्हारा कुछ बुरा तो नहीं हुआ? मैं तमाम सम्भावनाओं पर विचार करने लगी। रास्ते में जाते समय तुम्हें कुछ हो तो नहीं गया। तुम्हें हेलमेट पहनना अच्छा नहीं लगता। अखबार में प्रति-रोड एक्सीडेंट के बारे में पढ़ते समय मुझे ऐसा लगा। मैं यही मना रही थी कि रोज की तरह सब ठीक-ठाक चलता रहे।

इसके अगले दिन मंगलवार था—हम लगभग हर मंगल को मिला करते थे। मंगल की शाम तुम घर पर जरूर होगे, मैंने सोचा। तुम्हारे घर से एक किलोमीटर पहले जो पुल पड़ता है, वहाँ सड़क पर काम चल रहा था। रास्ता काटकर पक्की सड़क बन रही थी। इसलिए रिक्शा वहीं छोड़ना पड़ा। तुम्हारे घर तक पैदल पहुँचने में लगभग अँधेरा हो चुका था। बारिश की बूँदें गिरने लगी थीं। तुम्हारी पूरी गली में अँधेरा था—एक भी स्ट्रीट लाइट नहीं जल रही थी। मुझे एक टॉर्च लाना चाहिए था। लापरवाही के लिए खुद पर खीझ रही थी। तुम्हारे गेट पर पहुँचकर और भी आश्चर्य हुआ। तुम्हारे सारे घर में अँधेरा था—बरामदे में भी लाइट नहीं थी। अकसर मैं मंगल को ही आया करती थी। तुम्हारे न होने पर शरत मुझसे बैठने को कहता। तुम्हारे बाहरवाले दरवाजे पर ताला लगा था। तुम दोनों कहीं गये होगे। मैं बेहद निराश हुई। मेरे लिए अब सबसे अधिक दिक्कत थी मेरा घर लौटना। मैंने सोचा तक नहीं था कि तुम घर पर नहीं होगे। सड़क जहाँ से कटी थी वहाँ तक तो पैदल

हो जाना होगा। उसके बाद शायद रिक्शा मिल जाए। अभी भी रिमझिम बारिश हो रही थी—तेज भी हो सकती है। तुम्हारे बगलवाले घर से पूछने के लिए मैंने दरवाजा खटखटाया। वही लड़की दरवाजा खोलकर बाहर निकली जिसे तुमने मुझे यह बताते हुए एक-दो बार दिखाया था कि तुम्हारे बरामदे में खड़े होकर दातून करते समय वह अपनी खिड़की से तुम्हें देखा करती है।

"ये लोग कहाँ गये हैं? ताला बन्द है..." तुम कहाँ गये हो यह पूछना चाहा था।

"वे तो घर छोड़कर कबके जा चुके हैं। करीब सात-आठ दिन हुए होंगे।"

तुम्हारे बरामदे से मुझे चूने-चूने-सी महक आने-सी लग रही थी। करीब दो हफ्ते हुए होंगे तुमसे मुलाकात नहीं हुई। पर मुझे बताये बिना तुमने मकान बदल लिया!

"कहाँ गये, जानती हो?" मैंने पूछा।

"उनका तो तबादला हो गया यहाँ से।" उसने बड़े सहजभाव से कहा और कुछ मुस्कुरायी। मानो वह यह पहले से जानती हो कि उसे यह बात मुझे बतानी होगी। "मैं ठीक-ठाक तो नहीं जानती, पर उनका ट्रान्सफर उड़ीसा से कहीं बाहर हुआ है।"

मैं ठीक से समझी नहीं, वह क्या कह रही है। ऐसा तो नहीं होना चाहिए। तुरन्त सपने में देखा तुम्हारा चेहरा मुझे दिखा। उसे बताना उचित होगा या नहीं, यह सोचने से पहले मैं बोल पड़ी, "मैं घर कैसे लौटूँगी? मैंने सोचा था कि वे होंगे।" मेरी आवाज निश्चित ही घबरायी हुई-सी लगी होगी। वह समझ जाने-सी बोली, "हमारे घर में भी कोई नहीं है। मेरा भाई छोटा है, ट्यूशन गया है।"

तुम्हारे मकान के पीछेवाले घर में हाल ही में विवाहित तुम्हारे दोस्त की याद आयी। पति-पत्नी ने कई जगह हमें साथ-साथ देखा भी है।

"तुम्हारे पिछवाड़े वाले लोग मुझे जानते हैं। जरा चलोगी मेरे साथ?"

मेरे बुलाने पर तुम्हारे दोस्त की बीवी बाहर निकल आयी। पहले मैंने उन्हें जैसा देखा था, इस समय वह वैसी नहीं लग रही थीं।

"हमारा नौकर तो है नहीं, ये भी घर नहीं हैं।" उन्होंने होंठ दबाकर कहा। तुम्हारे बारे में उनसे फिर पूछने को मन नहीं हुआ।

"आपके साथ मैं कुछ दूर चलूँ!" इस बार उस लड़की को दुःख होने-सा लग रहा था।

"रहने दो, तुम भी तो परेशान होओगी। मैं चली जाऊँगी।" मैं मुड़कर चली आयी।

रास्ता मुझे बहुत लम्बा लग रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे एक बड़ा पहाड़

चढ़ रही हूँ मैं। चढ़कर उतर गयी तो उस ओर अपने इलाके में पहुँच जाऊँगी। मैं तुम्हारे बारे में जबरन नहीं सोच रही थी। हमारे घर की भीनी-भीनी महक याद करने की कोशिश कर रही थी। सड़क कटी होने के ठीक बाद रास्ते में कई लोग बैठे थे। शायद मजदूर लोग होंगे। पूरा रास्ता घेरे बैठे थे वे लोग। पेट्रोमैक्स जल रहा था। महिला-पुरुष इकट्ठे होने-जैसा लग रहा था। वे लोग घेरा बनाकर बैठे थे। बीच में ब्लाउज न पहने तथा बाल खोले बैठी एक अधेड़ औरत जोर-जोर से हाथ हिलाकर कुछ कह रही थी। मैं उन्हें पार करके जा रही थी कि वह जोर से चिल्लायी—"ठहर जा!"—उसने झट मेरा हाथ पकड़ लिया। उसका हाथ गीला-गीला लग रहा था। "क्या बात है?" मैंने खीझते हुए कहा।

"बैठ यहाँ!" उसने मुझे वहीं जमीन पर बिठा दिया। वहाँ बैठे सभी औरत-आदमी मेरी ओर कुतूहल भरी निगाह से देखने-से लगे।

"ले, पकड़ इसे!" उस औरत ने आदेश देने-सा कहा। बगैर फ्रेम का एक आईना वह मेरी ओर बढ़ा रही थी। "इसे एक बार सूँघ और इस आईने में एक बार देख!"

मैंने अड़हुल का फूल उसके हाथ से ले लिया। फिर एकाएक, "यह सब क्या बकवास है? रखो अपना यह सब।" मैंने खड़े होने की कोशिश की।

"एक बार देखती तो जा, तब समझेगी क्या है।"

मैंने बाध्य होकर अड़हुल का फूल सूँघा और आईने में देखा। आईने का काँच मानो खूब बड़ा हो गया। अभी आधे घंटे पहले मेरा तुम्हारे घर पहुँचना और उसके बाद की घटनाएँ मैंने उसमें साफ-साफ देखीं। मेरा बदन सिहर उठा। "कौन हो तुम?" अवाक्-सी मैंने उससे पूछा। वह किला फतह करने-सी बैठी थी।

"देख, देख और एक बार देख।" उसने मुझे आदेश दिया। मशीन-सी मैंने फिर से अड़हुल सूँघा और आईने में देखा। ताला लगे किसी अँधेरे मकान के आगे मैंने खुद को खड़ा पाया। वह मकान तुम्हारे मकान जैसा नहीं लग रहा था। पास वाला रास्ता या पेड़-पौधे कुछ भी पहचाने-से नहीं लग रहे थे। आईने में मुझ जैसी लग रही प्रतिच्छाया कतई मेरी नहीं थी, यह समझ गयी।

"उस वक्त भी मैंने तुझसे यही कहा था।" सबकुछ जानने-सी उस औरत ने कहा। "दुबारा जन्म लेने से तुझे कोई लाभ नहीं। तुझे इसी तरह बन्द दरवाजों से लौटना होगा। एक बार नहीं, दो बार नहीं, जितनी बार जन्म लेगी, उतनी बार। लेकिन तब तूने नहीं सुना। क्या सोचा था तूने, जैसा तू चाहेगी सारा कुछ वैसा ही होता चला जाएगा? इस बार दरवाजा तेरे लिए खुला होगा ना?" उसने खिल्ली उड़ाते हुए कहा।

दुःख और अपमान-से मेरा चेहरा तमतमा उठा था। मैं कुछ नहीं बोल पायी।

खड़ी हो गयी।

"रुक जा लड़की, जा कहाँ रही है और एक बार देखती जा।" वह चिल्ला उठी।

हथेली से मुँह ढँककर मैं सुबक-सुबककर रोने लगी। "मुझे छोड़ दो, भगवान के लिए मुझे छोड़ दो। मुझे ऐसा क्यों कह रही हो? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?" मैं रोते हुए रुक-रुककर बोलने लगी।

"लो सुनो! यह मुझसे बोल रही है, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? अरे तू मेरा बिगाड़ ही क्या सकती थी?"

मुझे अब किसी भी तरह चलकर ही जाना होगा—मुझमें घर लौटने की प्रबल इच्छा हुई। मैं भीड़ को धकेलती हुई बेतहाशा दौड़ने लगी। हमारे घर की ओर जानेवाले सीधे रास्ते को गलती से मैं पीछे छोड़ आयी। घर देर से पहुँचने के लिए जिस घुमावदार रास्ते से हम अकसर लौटा करते थे, मैं उसी रास्ते पर दौड़ने लगी। मुझे लगा, यह रास्ता कभी खत्म नहीं होगा। मुझे बहुत थकान लग रही थी। दौड़ते समय मैं रास्ते के दोनों ओर देखती जा रही थी—घासवाली जगह या सीमेंट का पुल हो तो थोड़ी देर सुस्ता लूँ। लेकिन बैठने का साहस नहीं हो रहा था। ऐसा लग रहा था मानो कालिसी (जिस पर देवी सवार होती है) जैसी दिखनेवाली वह औरत हवा की रफ्तार से मेरे पीछे दौड़ रही है।